मस्तष्कि ज़्वर के पीछे का वज्ञिान

चर्चा में क्यों ?
उत्तर प्रदेश के गोरखपुर के बाबा राघव दास मेडकिल कॉलेज अस्पताल में गंभीर रूप से बीमार एक के बाद एक 60 से अधकि बच्चों की मौत ने पूरे देश को हलिा दयिा है। उत्तर प्रदेश समेत देश के 14 राज्यों में इस बीमारी का असर है और रोकथाम के बजाय इलाज पर ध्यान देने की कारण यह बीमारी अभी भी बरकरार है।

आज भी योगी आदत्यिनाथ सरकार इस बीमारी का कारण खराब स्वच्छता को बता रही है। हालाँकि स्थानकि स्क्रब टाइफस और मस्तष्कि ज़्वर के बीच संबंध को स्वीकार कयि बनिा सरकार के लयि इस चकित्सिकीय आपात से नपिटना कठनि है।

मस्तष्कि ज़्वर का मूल कारण

- मणपिाल इंस्टीट्यूट ऑफ वायरस रसिर्च के गोवदिकरनार अरुणकुमार जैसे शोधकर्त्ताओं के आधुनकि शोध के अनुसार इस बीमारी का मूल कारण स्क्रब टाइफ़स (scrub typhus) है।
- स्क्रब टाइफस एक घुनजन्य रोग है, जो उत्तर प्रदेश में स्थानकि है।
- 1978 में गोरखपुर में इस बीमारी का जब पहली बार पता लगाया गया था, तब अस्पताल के डॉक्टरों ने पुष्टि की थी कि इस बीमारी के फैलने का मुख्य कारण जापानी एन्सेफलाइटसि (जे.ई.) वायरस है।

गलत दृष्टकिोण

- स्क्रब टाइफस को समझने में इतनी देर इसलयि हुई क्योंकि वैज्ञानकिों को प्रत्येक रोगी के लक्षणों जैसे एंसेफेलाइटसि से पहले बुखार की अवधि और मस्तष्कि के अलावा अन्य अंगों, जैसे यकृत और प्लीहा की भागीदारी को वसि्तार से पढ़ना चाहयि था।
- यदि इन लक्षणों पर शोध कयिा गया होता तो यह स्पष्ट हो गया होता कि यह महामारी केवल सामान्य वायरस के वज़ह से नहीं है।

आँकड़ों की अनसुनी

- दूसरी चूक यह थी कि उत्तर प्रदेश प्रशासन वैज्ञानकिों की राय नहीं सुन रहा था, जनिका कहना था कि गोरखपुर की यह बीमारी पछिले कुछ वर्षों में बदल चुकी है।
- जब 2007 में जापानी एन्सेफलाइटसि टीकाकरण शुरू हुआ, तब इस बीमारी की घटनाएँ 20% से भी कम हो गईं, लेकनि एन्सेफलाइटसि के मामलों का आना ज़ारी रहा। तब शोधकर्त्ताओं को यकीन हो गया कि इसके पीछे जापानी एन्सेफलाइटसि के अलावा कुछ अन्य कारण भी हैं।

मस्तष्कि ज़्वर : एक नज़र

- मस्तष्कि ज़्वर न सरि्फ गोरखपुर, बल्कि पूर्वी उत्तर प्रदेश के सोलह ज़लिों की समस्या है. इन ज़लिों में हर साल जून से नवंबर के बीच यह ज़्वर कहर बरपाता और बड़ों से अधकि बच्चों को शकिार बनाता है।
- अपने नन्हे मासूमों को खो देने वाले माताओं-पताओं की मानें तो इससे त्रस्त इस अंचल के लोगों ने अब इसको अपनी नयिति-सी मान ली है। आँकड़े गवाह हैं कि मस्तष्कि ज़्वर से सत्तर के दशक से अब तक इस अंचल में एक लाख से ज्यादा मौतें हो चुकी हैं।
- केंद्रीय संचारी रोग नयिंत्रण कार्यक्रम (एनवीबीडीसीपी) नदिशालय के आँकड़ों के अनुसार उत्तर प्रदेश, पश्चमि बंगाल, असम और बहिार समेत 14 राज्यों में एन्सेफलाइटसि का प्रभाव है, लेकनि पश्चमि बंगाल, असम, बहिार तथा उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल में इस बीमारी का प्रकोप काफी अधकि है।

- उत्तर प्रदेश के गोरखपुर, महराजगंज, कुशीनगर, बस्ती, सद्धिार्थनगर, संत कबीरनगर, देवरयिा और मऊ समेत 12 ज़लिे इससे प्रभावति हैं।
- इस साल गोरखपुर मेडकिल कॉलेज में अब तक इस बीमारी से कुल 139 बच्चों की मृत्यु हुई है। पूरे राज्य में यह आँकड़ा 155 तक पहुँच चुका है। पछिले साल 641 तथा वर्ष 2015 में 491 बच्चों की मौत हुई थी।
- गोरखपुर मेडकिल कालेज अस्पताल में पूर्वांचल के अलावा बहिार और नेपाल से भी मरीज इलाज कराने आते हैं। पूर्वांचल में दमिागी बुखार का प्रकोप फैलने के कारण इस इलाके में सबसे अधकि अशक्षिा और पछिड़ापन है। लोगों में साफ-सफाई के प्रति जागरूकता की कमी है।

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/science-behind-encephalitis-deaths